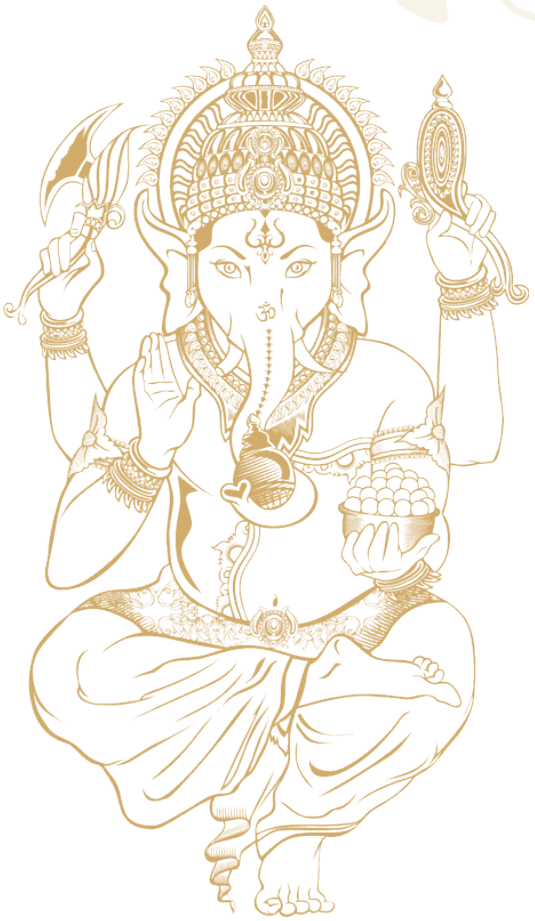

Joshi

12 Nov 2025

12:29 PM

Kullu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120291401**

तिथि 12/11/2025 **समय** 12:29:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kullu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:09
अक्षांश 31:58:00 उत्तर **रेखांश** 77:06:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:36 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	15:34:04 घं
वेलान्तर	00:15:54 घं
सूर्योदय	06:47:49 घं
सूर्यास्त	17:23:36 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	8
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	ब्रह्म
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो-डोभाल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

बुध 4वर्ष 2मा 20दि

बुध

12/11/2025
01/02/2030

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
12/11/2025
गुरु 25/05/2027
शनि 01/02/2030

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 11मा 27दि

भ्रामरी

12/11/2025
10/11/2026

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
12/11/2025
संकटा 11/03/2026
मंगला 21/04/2026
पिंगला 11/07/2026
धान्या 10/11/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:14:28	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			25:55:30	तुला	विशाखा	2	गुरु	केतु	नीच राशि	1.78	अमात्य	पितृ	मित्र
चंद्र			26:41:21	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	स्वराशि	1.08	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	11:21:38	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	स्वराशि	1.05	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व		12:09:32	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	सम राशि	0.97	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		00:55:58	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.16	कलत्र	धन	मित्र
शुक्र			12:28:50	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	1.00	भ्रातृ	कलत्र	वध
शनि	व		01:09:42	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.57	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु			21:55:08	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			21:55:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

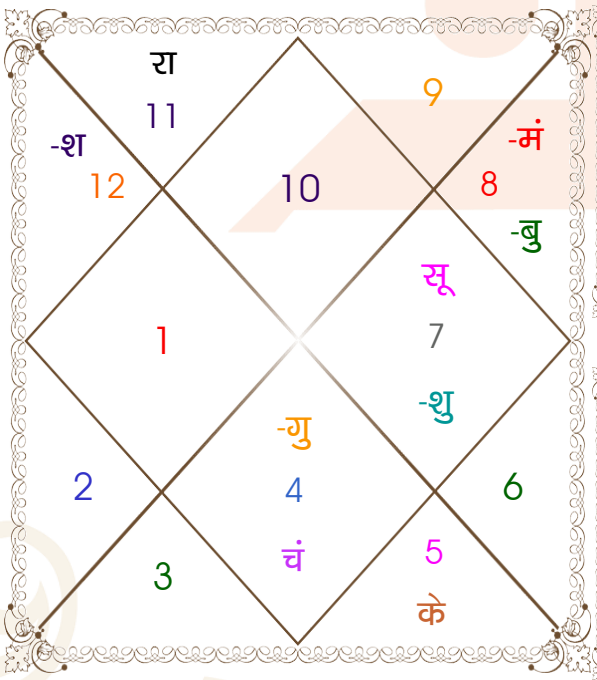

चन्द्र कुंडली

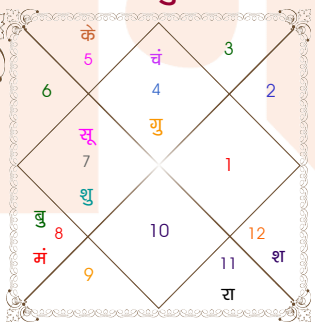

नवमांश कुंडली

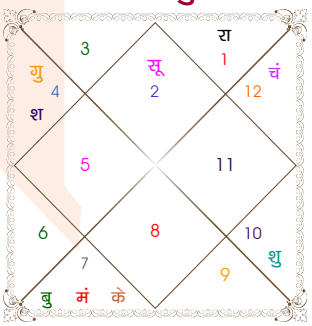

सर्वाष्टकवर्ग

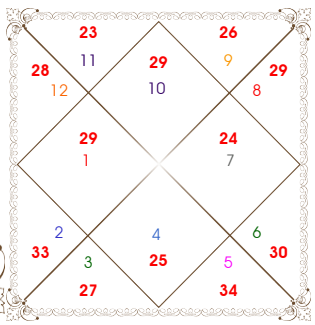

दशमांश कुंडली

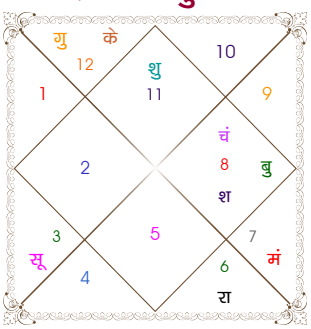

Maa Gayatri Jyotish Kendra
(NITIN SHARMA)
Jagatsukh, Tehsil Manali, District Kullu. Himachal Pradesh (175143).
9736005656
manalitoday@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, नाडी अन्त्य, योनि मार्जार तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "डो" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। इसके चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को कष्ट होता हैं। अतः इस दोष के निवारण के लिए जन्म समय में ही नक्षत्र की शान्ति शास्त्रोक्त विधि से अवश्य ही कर लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा पुनः 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। यह कार्य किसी योग्य विद्वान से करवाना चाहिए।

मंत्र – ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप यात्राओं तथा भ्रमण में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करने वाले होंगे। आपके स्वभाव में उग्रता की प्रबलता रहेगी तथा अपनी उग्रता से व्यर्थ में ही अन्य जनों को कष्ट प्रदान करेंगे। आप अपने उत्तम धन को भी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करने वाले होंगे। आपकी प्रवृति भी विलासयुक्त रहेगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

समाज में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आपका स्वभाविक आकर्षण रहेगा। आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। साथ ही आप किसी भी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर भी आप उसका अहसान अल्प मात्रा में ही मानेंगे। इसके साथ ही आप पहले सम्पन्न कार्यों को ही पुनः करने वाले होंगे।

लुब्धः खत्रजः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।

आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यो को करने वाला होता है।

भक्ष्य या अभक्ष्य पदार्थो में आप कोई भेद नहीं रखेंगे तथा जो भी सात्विक या तामसिक पदार्थ मिलेगा उसके भक्षण करने में शीघ्रता करेंगे। आपके कई कार्य कठोरता से पूर्ण होंगे। समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आप में दुष्टता का प्रभाव परिलक्षित होगा। अच्छे कार्यो की प्रवृति आप में मध्यम रूप से रहेगी तथा यत्नपूर्वक इन्हें सम्पन्न करते रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

आपकी बुद्धि भी मध्यम होगी तथा कृतज्ञतापूर्ण शब्दों को आप अधिकांश प्रयुक्त करेंगे। आपकी प्रकृति क्रोधी होगी तथा चाल चलन भी मध्यम श्रेणी का रहेगा। आप समाज से उचित सम्मान प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

कर्क राशि में जन्म होने के कारण आप शरीर से स्वस्थ ही रहेंगे। आप अपने समस्त कार्यो को करने में निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। तथा जीवन काल में प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके धनवान कहलाएंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। धार्मिक भावना भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी तथा सभी धार्मिक

कार्यकलापों को आप श्रद्धा के साथ सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा अपने बुद्धिबल से सबको प्रभावित करेंगे। कभी कभी आप में क्रोध की भावना की अधिकता हो जाएगी एवं आप अपने को बहुत ही दुःखी भी अनुभव करेंगे। आप सन्मित्रों के मित्र होंगे तथा अन्य कार्य अथवा कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे। शारीरिक बल से आप मध्यम रहेंगे तथा अपने घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आपका स्वरूप अलौकिक तेज से युक्त होकर दर्शनीय होगा। आप अपने मेहनत के द्वारा कमाए हुए धन से विपुल धन के स्वामी बनेंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा भाव रहेगा। आप समयानुसार उनके प्रति अपने श्रद्धाभाव का प्रदर्शन करते रहेंगे। श्रेष्ठ कुल में जन्मे लोगों के प्रति आप के मन में वास्तविक श्रद्धा भाव रहेगा तथा उनको सेवा प्रदान करने में आप परम शन्ति तथा सन्तुष्टि की प्राप्ति करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम से इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही अन्य कलाओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में विख्यात होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका कंठ भाग थोड़ा स्थूल रहेगा तथा आप पूर्ण रूप से स्त्री जाति के वश में रहेंगे। आपके समस्त मित्र सद्गुणों से युक्त होंगे। आप बहुत भवनों के निर्माता होंगे अथवा बहुत से मकानों के स्वामी भी बन सकते हैं। आपका कद भी छोटा रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या आपकी अल्प रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वको द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सुख सम्पतियों का उपभोग करने वाले होंगे तथा ज्योतिष शास्त्र के आप ज्ञाता एवं श्रद्धालु होंगे तथा स्वभाव से सुशील रहेंगे। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में चन्द्रकलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त करते रहेंगे अर्थात जीवन उतार चढ़ावों से संघर्षपूर्ण रहेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में किये जा सकेंगे। दबाव या बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। फलतः मित्रों के प्रिय रहेंगे। आपकी रूचि जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में भी निरन्तर बनी रहेंगी।

आवक्द्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य शाली पुरूष होने का आपको गौरव प्राप्त होगा एवं आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे। आपके कार्य धैर्यपूर्वक होंगे। शीघ्रता तथा उतावली करना आपके स्वभाव के विरूद्ध होगा। स्वगृह से आप युक्त रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय भ्रमण करने या यात्रादि में व्यतीत होगा। आप का अन्य जनों से लौकिक व्यवहार विनयशील रहेगा। आप के अन्दर सैक्स की भी प्रबलता रहेगी। तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका हार्दिक आभार व्यक्त करेंगे। आप राज्य या सरकार के किसी उच्च पद को सुशोभित करने में भी सफल रहेंगे। सत्य का पालन करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक सत्य एवं प्रिय वाणी ही बोलेंगे जो सुनने वाले को रूचिकर लगेगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप यदा कदा व्यर्थ ही बोलेंगे तथा हृदय में दया एवं करूणा की भाव का अल्पता रहेगी। आप अपने कार्यों को साहस तथा धैर्य के साथ सुसम्पन्न करने में सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यों को ही अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगे। शीघ्र छोटी छोटी बातों पर क्रोधित होना तथा उत्तेजित होना आपकी प्रकृति होगी तथा अपने कार्य सिद्धि के लिए आप कोई भी कार्य करने को तत्पर रहेंगे। शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगे तथा अन्य जनों से छोटी छोटी बातों पर विवाद करने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। इस प्रकार अपने व्यवहार से समाज में आपका अधिकांश मनुष्यों से विरोध रहेगा। अतः अन्य जनों से विग्रमता

तथा संयमपूर्वक व्यवहार करें।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी ग्रसित हो सकते हैं तथा देखने में आपका मुख दीर्घता से युक्त होगा। आपकी वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों को अपने वार्तालाप में यत्नपूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही वीरता तथा साहस से युक्त रहेंगे। आप अपने कार्यों को करने में पूर्ण दक्षता का प्रदर्शन करेंगे। मधुर भोजन तथा मधुर पेय आपको अत्याधिक रूचिकर प्रतीत होंगे। तथा इनके प्रयोग से अत्यन्त आनन्द की अनुभूति करेंगे। आप स्वभाव से साहसी होंगे तथा साहस पूर्वक अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। परन्तु दुष्टता का समावेश कभी कभी आपके स्वभाव में हो जाता हैं। अतः कठोरकर्मो की तरफ भी आपका आकर्षण रहेगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य

प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों में तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार का भी उपवास करना चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।